

পাঁচমুড়ার টেরাকোটা ও শুশুনিয়ার প্রস্তর শিল্প

Malay Khan

History Department, Jadavpur University

ভূমিকা

"বাঁকুড়ার হস্তশিল্পে পাঁচমুড়ার টেরাকোটা" এই ছোট্ট গবেষণামূলক প্রবন্ধটি লিখিতে পূর্ব থেকেই অধিক আগ্রহী ছিলাম। বাঁকুড়া ইউনিভার্সিটি গবেষণামূলক পেপারটি পূরণ করা হেতু এই সুযোগটি আমার পুনরায় হস্তগত হয়। যথাত হবে এই গবেষণামূলক প্রবন্ধটি অধিক আগ্রহের সহিত এবং যথাসাধ্য সমস্ত এবং সকল তথ্য যা হয়তো অজানা থাকতে পারে তার পরিচয় দিয়াছি। পাঁচমুড়ার টেরাকোটা শিল্পের সকল তথ্য এখানে সংশ্লিষ্ট করিয়াছি। যা আমাদের জ্ঞান ভান্ডারকে সমৃদ্ধ করে তুলতে পারে।

পাঁচমুড়া টেরাকোটা শিল্পের সমৃদ্ধি এবং বিখ্যাত রূপ আমি ছোটবেলা থেকেই লক্ষ্য করে এসেছি এবং তাকে জানার চেষ্টাও করেছি কিন্তু এই সুযোগের মাধ্যমে আমি এই টেরাকোটা শিল্পের প্রতি সূক্ষ্ম এবং গুরুত্বপূর্ণ তথ্যকে জানার চেষ্টা করেছি যা এই প্রবন্ধে উল্লেখ করা হয়েছে। পশ্চিমবঙ্গের শিল্পীর অবস্থা বর্তমানে উন্নতির পথ ও অনেক স্থানে অবনীতির পথে দেখা যায়। এই বিষয় আমি অবগত ছিলাম না কিন্তু এই প্রবন্ধের মাধ্যমে আমি এই শিল্পের করুন অবস্থা এবং উন্নতির পথপ্রদর্শক হিসেবে সকল তথ্যকে উল্লেখ করিয়াছি। বাঁকুড়ার শিল্প পূর্ব হইতেই ভারত বিখ্যাত ছিল যা পশ্চিমবাংলাকে সমৃদ্ধ করতে ও সুন্দর করতে যথেষ্ট সাহায্য করেছে। ডক্টর সঞ্জয় মুখোপাধ্যায় ও ডঃ বিনয় বর্মনের সাহায্য নিয়ে আমার এই সূক্ষ্ম আমার জ্ঞান কে সমৃদ্ধ করতে ও প্রবন্ধকে যথার্থ পূর্ণতা দান করতে পেরেছি। তাহাহেতু তাহাদেরকে অশেষ ধন্যবাদ।

পাঁচমুড়া টেরাকোটা শিল্প

অধ্যয়ন এলাকার অবস্থান: পশ্চিমবঙ্গ ভারতের মধ্যে জাঁকজমকপূর্ণ "টেরাকোটা" কারুশিল্প উৎপাদনে অন্যতম শীর্ষস্থানীয়। এই মৃৎশিল্প ভারতে নতুন সংস্করণ নয় বরং এর নিজস্ব একটি দীর্ঘ ঐতিহাসিক পটভূমি রয়েছে। বিভিন্ন প্রত্নতাত্ত্বিক প্রমাণ প্রমাণ করে যে এটি সিন্ধু উপত্যকা সভ্যতার যুগে প্রচলিত ছিল। যদিও বাংলার নৈপুণ্যের জমিতে কখন এবং কীভাবে এই পোড়ামাটির কারুশিল্পের সূচনা হয়েছিল তা এখনও রহস্যজনক, তবে এই অঞ্চলে উর্বর পলিমাটি এবং প্রচুর কাদামাটির প্রাপ্যতা অবশ্যই এটি দ্রুত ছড়িয়ে দিতে সহায়তা করে। পশ্চিমবঙ্গ পর্যটকদের কাছে পোড়ামাটির কারুশিল্পের জিনিস কেনার জন্য এটি একটি জনপ্রিয় গন্তব্য কারণ এটি এখন পর্যন্ত এই সৃজনশীল এবং আলংকারিক কারুশিল্পের বৃহত্তম উত্পাদনকারী। বাঁকুড়া জেলার খাতরা মহকুমার অন্তর্গত পাঁচমুড়া গ্রামটি এই পোড়ামাটির কাজের বৃহত্তম উত্পাদন ইউনিট। অধ্যয়ন এলাকা হিসাবে নেওয়া হয়। পাঁচমুড়া 22°58'00"N- 22°66'67"N এবং 87°10'00"E 87°16'67"E এর মধ্যে অবস্থিত। গড় সমুদ্রপৃষ্ঠ থেকে এর গড় উচ্চতা 68 মিটার। মোট গ্রামের জনসংখ্যা হল 719 (2011 সালের জনসংখ্যার তথ্য অনুযায়ী), যার মধ্যে সর্বাধিক জনসংখ্যা টেরাকোটা কারুশিল্পের উপর ভিত্তি করে। লম্বা গলার ঘোড়া এই কারুশিল্পের মৌলিক প্রতীক যা বাঁকুড়া জেলার প্রতিনিধিত্ব করে। এই লম্বা গলাটি বিষ্ণুপুরের মল্ল রাজ্যের রাজকীয়তা দেখায়, যেটি শুধুমাত্র ধর্মীয় বা আধ্যাত্মিক আবেদনে এই কারুশিল্পকে কেন্দ্রীভূত করেনি বরং এটি গেস্ট হাউস, বিলাসবহুল হোটেলগুলিকে এর মহিমাযুক্ত আলংকারিক মূল্যবোধের জন্য সজ্জিত করে।

পাঁচমুড়া গ্রামটি বাঁকুড়া জেলায় অবস্থিত, যেখানে প্রায় 300 জন শিল্পী পোড়ামাটির কারুশিল্প তৈরির কাজে নিযুক্ত রয়েছে। কারুকাজটি লম্বা গলার ঘোড়া এবং হাতি, মনশা চালি, হিন্দু পুরাণের বিভিন্ন পুতুল এবং মূর্তি, টেরাকোটা শিল্প এবং অন্যান্য প্রবন্ধ যা সজ্জার উদ্দেশ্যে কক্ষগুলিকে শোভিত করে তা তৈরির জন্য বিখ্যাত। এই সমস্ত নৈপুণ্যের আইটেমের মধ্যে লম্বা গলার ঘোড়াগুলি সবচেয়ে গুরুত্বপূর্ণ। টেরাকোটা বেকড মাটির অনুরূপ। কারিগররা প্রায়শই তাদের তৈরি পণ্যগুলি বেকড মাটি দিয়ে রঙ করে এবং কাঠের জ্বালানী দিয়ে বা প্রায়শই ইউক্যালিপটাস পাতার সাহায্যে একটি ভাটায় আগুনের মাধ্যমে পুড়িয়ে দেয়। এই পোড়ামাটির কারুকাজটি হল সহজ শৈল্পিক ফর্ম যা মানুষের বা পশুর মূর্তি থেকে শুরু করে গৃহস্থালির সাজসজ্জার উপাদান এবং শোভাময় চিত্রের বিস্তৃত পরিসর থাকতে পারে। এটি বিশ্বাস করা হয় যে এই পোড়ামাটির কারুকাজটি 'মল্লা' রাজবংশের সময় শুরু হয়েছিল যা সপ্তম শতাব্দীর শেষের দিকে ছিল। এই শৈল্পিক আবিষ্কারের পর কারিগর বিষ্ণুপুরের মন্দিরের দেয়ালে এই কারুকাজটি প্রজেক্ট করতে শুরু করেন। এটি এখন আন্তর্জাতিকভাবে বিখ্যাত এবং এর শিল্প ও ঐতিহ্যের মূল্যের জন্য জিআই সূচক পেয়েছে। পাঁচমুড়ায় একটি মৃত্যুশিল্পী সমবায় সমিতি রয়েছে, এটি একটি সহায়তা কেন্দ্র এবং শিল্পী ক্লাস্টার দ্বারা তাদের উত্পাদন এবং

समुद्धिर जन्य तैरि करा इउनाइटेड फोरराम। नभेधर थेके डिसेधर मासे, एकराटि उतुसव सह एकराटि तिन थेके पाँच दिनेर ग्रामीण कारुशिल्ल मेलाेर आयोजन करा हय येथाने प्रचुर दर्शनाशीं एवंग पर्यटककरा एहि कारुशिल्लेर काजे केना एवंग प्रचार करते आसे। पाँचमुडाय पोँछाने खुबई सुविधाजनक। निकटतम रेलओये स्टेशन हल बाँकुड़ा एवंग बिष्णुपुर। राजेयर राजधानी कलकाता थेके एरि 4 घन्टाेर पथ।

पोड़ामाटिेर कारुशिल्ल तैरिेर यन्त्रपाति ओ अतिन्न कौशल:

पोड़ामाटिेर काजे मूलत हस्तशिल्ल। कुटिेर वा कुँडेघरे उंपादित हय त्हाि एके कुटिेर शिल्ल बला हय। बेशिरभाग काजेटा हात ओ आङ्गुलेर कौशलगत उपाये येकेनो जिनिंस तैरि करा संभव। कुमोरेर काजे ये चाका ब्यवहार करा हय। सेटा बिशेष करे सहजे फाँपा करार काजे दरकार। त्हाि हाँडि, कलसी, घोड़ा, हातिेर अंश ओ छोट जिनिंस येमन सरा, खुरि इत्यादि तैरिेर काजे प्रयोजन हय। पुरोनो दिनेर टाका - कोनो इङ्गिनचालित यन्त्र नय। वर्तमाने काजेर सुविधार जन्य लौह निर्मित बल बेयारिंयेर साथे चारटि काठ द्वारा निर्मित टाका ब्यवहार हये थाके। एहि टाका छाड़ा आरओ किछु साहाय्यकारी सरङ्गाम ब्यवहार करा हय। ँसव सरङ्गामगुलि बिशेष बिशेष काजे ब्यवहत हये थाके। येमन टौकि चाक काजेर जन्य। बोल्या, पिटुना कोनो जिनिंसके पिटिये बडो करार जन्य जोड़ा लागानेर जन्य ब्यवहार करा हय। एछाड़ा निर्मित कोनो जिनिंसके मसृण ओ अलंकरण करार काजे लागे उचा, चियाडि, बिनुक, जलपात्र, न्याकड़ा, चालुनी, च्यापटापतर एमनकि गाछेर काँटाओ ब्यवहार करा हय। इदानिं माटिेर प्रतिमा ओ सौथिन काजेर सुविधार जन्य काठ ओ बाँश दिये तैरि करा अनेक रकम उपकरण दोकान बाजार थेके क्रय करा यय। यारा कारिगर तारा निजेराई निजेर काजेर सुविधा मते ँसव सरङ्गाम तैरि करे निते पारे।

चाकार काजेटा खुब कम समयेर मध्ये ताड़ताडि करा संभव। तबे टाकाते पूर्णङ्ग अवयव तैरि हय ना। हाँडि, कलसी, खोला, थापरि, कुडि इत्यादि तैरिेर स्फेद्रे शुधु सम्भुभागेर कानार अंशटा चाकार साहाये हय। बाकी पिछनेर फाँका अंश अतिरिक्त माटि जुडे बोलै-पिनार साहाये पिटिये बन्ध करे बडो करा हय। एहि पिटानेर काजेटा दु-तिनवार धरे एकराटि शुकनो बतर करे सम्पूर्ण करा हय। एकराईभावे घोड़ा, हाति, मनसावारी तैरिेर स्फेद्रे टाकाते खण्णशगुलि रोदे सामान्य शुकनो बर करे जोड़ा लागानेर पर उटा, चियाडि दिये मसृण करे अलंकरणेर काजे हये थाके। टाकार ब्यवहार हय फाँपा ओ द्रुत करार जन्य। एछाड़ा बह्विध जिनिंस चाकाते तैरि हये थाके। एटा लिखे बोवानो सहज नय। यारा प्रत्यक्षदर्शी ताराई बुवाते पारेन। कोनो नूतन मूर्ति बरात हले एटा बानानेर जन्य कारिगर पूर्णङ्ग मूर्तिटा मनेर मध्ये ँके निये एर खण्णशगुलि चाकाते किंवा हाते कोयेल पाकिये तैरि करते पारे। टाकार काजेई सब समय आसल नय। कौशलगत हातेर साहाये मूर्तिर गठन बानिये निते हय। एकराटि मनसार चालि करार जन्य छोट बडो बह्विध अंश दरकार हय। चालचित्रेर मध्ये थाके काहिनीर बह्विध मूर्ति, सारिवद्ध सापेर सारि, पुतुल, फुलेर नन्ना इत्यादि। चालचित्रेके शुधुमात्रे काँचा नरम माटिेतेई धरे राखार जन्य यथेष्ट कौशल ओ अतिज्जता प्रयोजन। पोड़ामाटिेर काजे बाँश, काठ वा लोहार तर ब्यवहार हय ना। माटि शुकनो हले संकोचन हय किन्तु बाँश, काठ ओ लोहार रड वा तारेर संकोचन हय ना। माटिेर साथे ँसव द्रव्य ब्यवहार हले फेटे भेष्टे खसे पडे। सेइजन्य चालचित्रेके निखूत करार जन्य माटिेर तैरि रडेर मते खुटि वा ठेसू लागिये तैरि करा हय। एकराई नियम बिगत दिन थेके चले आसछे।

"टेरैकोटा" हल एकराटि शक्त, आधा सामङ्गस्यपूर्ण, आर्द्रता मुक्त कादामाटि या साधारणत मृणपात्र तैरिेर जन्य पोड़ानो हय। प्राथमिक पर्याय थेके शेष पर्याये पण्य तैरिेर सामग्रिक प्रक्रिया नीचे देओया हल:

1. उपकरण प्रस्तुत करा: कादामाटि मिहि करा हयेछे एवंग अन्यान्य काँचामाल येमन खर (शुकनो धानेर डाल), बालि एवंग जल योग करा हये।
2. कादामाटि सठिकभावे मिश्रित करा: कारिगरेर निजेर हात वा पाये जलेर साहाये अन्यान्य काँचामालेर साथे माटि मेशिये नेई।
3. चाकार काजे: एरि मूलत कारुशिल्लेर शङ्कु वा सिलिन्डार आकृतिेर अंश तैरि करार जन्य ब्यवहार करा हय।
4. शुकानो: बाडिेर करिडोरे एकरा थेके दुई दिन समयकाल चाओया स्थाने शुकानो हय।
5. हातेर काजे: चाकार उपर तैरि अंशगुलिके युक्त करा एवंग तादेर एकरात्रित करे एकराटि सम्पूर्ण आकृति प्रदान करा हय।
6. बिस्तारित मोटिफेर काजे: साधारण बाँश थेके तैरि साधारण चिरारि ब्यवहार करे एरिेर साजसज्जार जन्य मश्रिन करे सुन्दर आकृतिेर देओया हय।
7. चूडान्त शुकानो: एरि रोदे सामान्य शुकानेर परे करा हय।
8. रङु करा: फायारिं अपारेशनेर आगे, महिला कारिगरेर चूडान्त रङु एवंग रङुेर कोट तैरि करे।
9. फायारिं: 10-15 दिनेर जन्य एकराटि ँतिह्यवाही भाटिेते एकराटि एकराक स्टाक होल दिये चारपाशे आङ्गुन लागानो

¹ International journal of multidisciplinary educational research - Susmita Paramanik ,P.P Sikdar, Debabrata Bondhapadhyay and Anirudha Banerjee.

হয় ও ভালো করে পুড়িয়ে নেওয়া হয়। 10. পরীক্ষা/বাছাই অবশেষে, ভাল পণ্য প্রদর্শনের জন্য রাখা হয় এবং বিভিন্ন দামে বিক্রি করা হয়।

বাজার: বেশিরভাগই তারা তাদের কারুশিল্প তাদের নিজস্ব বাড়ির করিডোরে (বারান্দা) বা বাড়ির ভিতরে প্রদর্শন করে। আকার অনুযায়ী ছোট থেকে বড় ঘোড়া সাজানো আছে তাদের বাড়িতে। সাধারণত, ঘোড়ার লেজ এবং কানের টুকরো আলাদাভাবে রাখা হয় পরে কারুশিল্পের জিনিস বিক্রি করার পরে এটি রাখা হয়। চূড়ান্ত সমাপ্তি এবং রপ্তানি: স্থানীয়ভাবে সংবাদপত্র একটি প্যাকেজিং উপাদান হিসাবে নেওয়া হয় এবং এটি ফলের কার্টন বা অন্যান্য সহজলভ্য কার্ড বোর্ড বাস্তব ইত্যাদিতে প্যাক করা হয়। পরে এটি তিন চাকার রিকশা বা কিছু মিনি ট্রাকে বিক্রির উদ্দেশ্যে বাঁকুড়া বা বিষ্ণুপুর বাজারে নিয়ে যাওয়া হয়। বিষ্ণুপুর এবং বাঁকুড়ার স্থানীয় বাজারে নৈপুণ্যের জিনিসগুলি প্রদর্শিত হয়। ঘোড়ার দাম 20 থেকে 2000 টাকা পর্যন্ত হয়ে থাকে। 14 থেকে 6 ফুট উচ্চতার মাপ।

প্রতি ডিসেম্বরে শীত মৌসুমে এই কারুশিল্পের আরও ভালো প্রদর্শন ও প্রচারের জন্য বার্ষিক মেলার আয়োজন করা হয়। বাংলা ক্যালেন্ডারে চৈত্র মাসে চড়ক মেলা হল সেই উৎসব যেখানে কারুশিল্পের সামগ্রী বিক্রির সুযোগ পাওয়া যায়। পঞ্চমুড়ার কারিগরের সাথে পশ্চিমবঙ্গের ক্রাফট কাউন্সিল অত্যন্ত সংযুক্ত। এই প্রতিষ্ঠানটি এই কারিগরকে তাদের উন্নত প্রশিক্ষণ ও ব্যবস্থাপনা, আর্থিক ও প্রযুক্তিগত সহায়তা এবং বিপণন সহায়তা অর্জনের জন্য সাহায্য করে। (শ, 2008) বর্তমান বিশ্বায়নের যুগে বাঁকুড়া জেলার টেরাকোটা কারুশিল্প বিশ্বব্যাপী জনপ্রিয়। এই পাঁচমুড়া অঞ্চলে পোড়ামাটির নৈপুণ্য প্রথম উদ্ভাবিত হয়েছে বলে এখন স্বীকৃত। এর সফল আবিষ্কারের পর কারিগররা বিষ্ণুপুরের মন্দিরের দেয়ালে এই কারুকাজটি খোদাই করে। বিভিন্ন ঐতিহ্যবাহী গৃহ-ভিত্তিক আলংকারিক নিবন্ধ, ফুলদানি, শঙ্খ, বাসনপত্র, অলঙ্কারগুলি এই অঞ্চলের প্রধান কারুশিল্প। স্থানীয় কারিগররা কুস্তকার সম্প্রদায় হিসাবে বিখ্যাত, যারা প্রতিদিনের গৃহ-ভিত্তিক উপযোগী পণ্যগুলি আলংকারিক এবং আধ্যাত্মিক প্রতীকী আইটেম তৈরিতে নিযুক্ত থাকে। কারিগররা সম্প্রতি দৈনিক প্রয়োজন ভিত্তিক পণ্য যেমন বাতি, টাইলস ইত্যাদি তৈরি করে যার শহুরে এলাকায় সর্বোত্তম চাহিদা রয়েছে।

শিল্পী ও পুরস্কার প্রাপ্ত শিল্পী

টেরাকোটা শিল্পে বিখ্যাত ব্যক্তিবর্গ হলেন রাসবিহারী কুস্তকার মদনমোহন কুস্তকার শ্রীপশুপতি কুস্তকার শ্রীগণপতি কুস্তকার শ্রীধীরেন্দ্রনাথ কুস্তকার শ্রীসুনীলবরণ কুস্তকার শ্রীবুদ্ধদেব কুস্তকার জয়ন্তী কুস্তকার শ্রীতারকনাথ কুস্তকার শ্রীবৈদ্যনাথ কুস্তকার শ্রীবিষ্ণুনাথ কুস্তকার শ্রীবাউলদাস কুস্তকার শ্রীচণ্ডীদাস কুস্তকার শ্রীদেবশীষ কুস্তকার শ্রীভূতনাথ কুস্তকার শ্রীজগন্নাথ কুস্তকার শ্রীনাড়ুগোপাল কুস্তকার শ্রীকাঞ্চন বুস্তকার শ্রীমপুর কুস্তকার শ্রীজহরলাল কুস্তকার শ্রীরবীন্দ্রনাথ বুস্তকার শ্রীব্রজনাথ কুস্তকার নন্দলাল কুস্তকার শ্রীকার্তিক কুস্তকার শ্রীমতী উর্মিলা কুস্তকার প্রায় ২৫ জন শিল্পী জেলা ও রাজ্যস্তর থেকে পুরস্কার প্রাপ্ত এদের মধ্যে একজন জাতীয় পুরস্কার প্রাপ্ত হলেন রাসবিহারী কুস্তকার। তিনি ১৯৬৯ সালে জাতীয় স্তরে পুরস্কার পান

সমবাই ও সরকারি সাহায্য :- অতীত থেকে সমগ্র দেশ কুটির শিল্পের উপর নির্ভরশীল। এই প্রসঙ্গে পাঁচমুড়ার টেরাকোটা শিল্পের উন্নয়ন প্রসঙ্গে শিল্পী ও সরকারের ভূমিকার কিছু তথ্য তুলে ধরা যাক। সরকারী নিয়মানুযায়ী বিগত ৩-১২-১৫৯ তারিখে পাঁচমুড়া মৃৎশিল্পী সমবায় সমিতি লিঃ প্রতিষ্ঠিত হয়। সমিতির উদ্দেশ্য সামগ্রিকভাবে শিল্প ও শিল্পীদের উন্নতিসাধন করা। প্রকৃতপক্ষে দীর্ঘ সময়ের মধ্যেও এটা সম্ভব হয়নি। কারণ শিল্পী সদস্যদের উপযুক্ত শিক্ষা ও চেতনার অভাব। সমিতি পরিচালনার জন্য যথেষ্ট সময় দিতে হয়। কিন্তু যাদের কর্ম না করলে সংসার চলে না তারা সময় দেবে কি করে। সমিতি শুরুর প্রথম দিকে কিছুটা উন্নতির সূত্রপাত দেখা যায়। সরকারী অর্থে কাঁচামাল মাটি ও উন্নতমানের চাকা প্রাপ্তিতে কিছুটা হলেও সমস্যার সমাধান হয়েছিল। কিন্তু অবহেলাবশতঃ ও সহযোগিতার অভাবে আগামীদিনের উন্নয়ন ও কর্মসংস্থান বাধাপ্রাপ্ত হয়। কেনা জমির মাটি শেষ হওয়াতে শিল্পী পরিবার সঙ্কটের মুখে পড়ে। বাধ্য হয়ে শিল্পীরা চাঁদা সংগ্রহ করে একটা মাটির জায়গা ক্রয় করে। কিন্তু নিকৃষ্ট মানের মাটির জন্য জায়গাটা অকেজো অবস্থায় পড়ে আছে। দীর্ঘদিন ধরে অপরের পতিত জায়গা ও পুকুর থেকে মাটি সংগ্রহ করে কোনোরকমভাবে শিল্পীরা কাজ চালিয়ে যাচ্ছে। এদিকে দীর্ঘদিন সাংগঠনিক কাজ বন্ধ থাকায় সমিতি মৃত অবস্থায় উপনীত। বিগত দু'হাজার সালে সমিতিকে পুনরুজ্জীবিত করার লক্ষ্যে একটি বলিষ্ঠ কার্যনির্বাহক কমিটি গঠনের সিদ্ধান্ত নেওয়া হয়। দু'হাজার এক সালে চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত মোতাবেক শ্রীযুক্ত তারকনাথ কুস্তকার ও শ্রীযুক্ত ফাটিকচন্দ্র কুস্তকার যথাক্রমে সম্পাদক ও সভাপতি হন। নবগঠিত কমিটি চিন্তাভাবনা করে সবার আগে সমিতির একটি কার্যালয় নির্মাণের উদ্যোগ গ্রহণ করে। যেখানে বসে উন্নয়ন সম্পর্কিত আলোচনা হবে। সেই সাথে দেশ বিদেশ থেকে শিল্পানুরাগী ব্যক্তিত্বগণ উপস্থিত হলে আশ্রয় নিতে পারবে, সেখানে পানীয় জল ওটয়লেটের ব্যবস্থা থাকবে। শোরুম খুলে উৎপাদিত জিনিসের কিছুটা হলেও সাজানো যাবে। সাধারণ সভা ও প্রশিক্ষণের পক্ষে সহজসাধ্য হবে। গৃহ নির্মাণের টাকার জন্য সরকারের নিকট আবেদন করা হয়। কিন্তু সুবিধামতো পাড়ার কাছাকাছি কেনার মতো

জমির অভাব। বহু চেষ্টার পর সমাধান হল। গ্রাম্য রাস্তার দু'পাশে দু'খণ্ড জমি ক্রয় করা হল। সেখানেই সমিতির কার্যালয় প্রতিষ্ঠিত হয়েছে সরকারী টাকায়। টাকার শীর্ষভাগ DRDC কিয়দংশ 'খাদি ও গ্রামীণ শিল্প পরিষদ, বাঁকুড়া'র অর্থানুকূলে ও 'তালডাংরা পঞ্চায়েত সমিতি'র নির্মাণ সহায়ক দ্বারা দ্বিতল বিশিষ্ট কার্যালয়, একশত টাকা ক্রয় ও কুড়িটি পুয়ান (চুল্লি) তৈরির টাকা ব্যয় করা হয়েছে সদস্যদের উন্নয়নের জন্য।

সমিতির সদস্য সংখ্যা ক্রমশ বৃদ্ধি পাচ্ছে। শিল্পীদের সঠিক পরিচয়পত্র হিসাবে 'Artisan Card' সমিতির প্রত্যেক শিল্পীদের মধ্যে প্রদত্ত হয়েছে। আরও উল্লেখ করা প্রয়োজন বিগত দু'হাজার সাল থেকে 'খড়গপুর আই.আই.টি. ইনস্টিটিউট' পাঁচমুড়ার টেরাকোটা শিল্পকে আরও উন্নত স্থানে পৌঁছানোর লক্ষ্যে একটি উন্নতমানের চুল্লি তৈরির উদ্যোগ নেন। পাশাপাশি কাজের সুবিধার্থে একটি দু'চালার সেড নির্মিত হয়েছে। কিন্তু বার বার চেষ্টা করেও উন্নতমানের চুল্লি তৈরিতে ব্যর্থ হয়েছে। ব্যর্থতার কারণ শিল্পীদের কাছে আজও অন্ধকারে রয়ে গেছে। সমিতির গঠনতন্ত্রের নিয়মানুযায়ী বিগত ২০১১ সাল থেকে ২০১৭ সালের মধ্যে কয়েকবার কার্যনির্বাহক কমিটি গঠিত হয়েছে। সমিতির বর্তমান সম্পাদক শ্রীযুক্ত দীপঙ্কর কুম্ভকার ও সভাপতি শ্রীযুক্ত ব্রজনাথ কুম্ভকার। নবনির্বাচিত কমিটিও উন্নয়নকল্পে সচেষ্ট ভূমিকা পালনে ব্যস্ত। সমিতির বর্তমান সদস্য সংখ্যা দেড় শতাধিক। সমিতিতে মহিলা সদস্যও সন্তোষজনক। বিগত তিন চার বৎসর যাবৎ পশ্চিমবঙ্গ সরকার অনুমোদিত 'বাংলানাটকডম' নামক একটি সুবৃহৎ সংস্থা পাঁচমুড়ার টেরাকোটা শিল্পের সার্বিক উন্নয়ন প্রকল্পে আকর্ষণীয় ভূমিকা পালন করে চলেছে। সমিতির সাথে বোঝাপড়ার মাধ্যমে অনেক মিটিং, ট্রেনিং ও সংস্থার নিয়ম সংক্রান্ত বহুবিধ আলোচনাচক্র অনুষ্ঠিত হয়েছে। শিল্পের প্রচার ও প্রসারকল্পে আন্তর্দেশীয় বহু মেলায় যোগদানের ব্যবস্থাও করা হয়। গত ২০১৪ থেকে ২০১৬ বর্ষে তিনবার স্থানীয়ভাবে মেলার ব্যবস্থা করা হয়েছে। জেলা ছাড়িয়ে সমগ্র রাজ্যের মানুষ যাতে টেরাকোটা খ্যাত পাঁচমুড়ার সাথে পরিচিতির সুযোগ হয় সেই উদ্দেশ্যে এই মেলার আয়োজন। পাঁচমুড়া হাইস্কুল ময়দানে তিনদিন ব্যাপী অনুষ্ঠানের সুব্যবস্থা হয়ে থাকে। পশ্চিমবঙ্গের বিভিন্ন প্রান্ত থেকে আমন্ত্রিত ব্যক্তিবর্গের উপস্থিতিতে লোকসংগীত, ছোঁনাচ, নাট বাউলগানের বহুবিধ খ্যাতনামা শিল্পীদের দ্বারা অনুষ্ঠান মঞ্চে পরিবেশিত তছাড়া 'বাংলানাটকডটকম' এর আর্থিক সহায়তায় গত বছর কাজের না সংগ্রহের জন্য নিকটবর্তী স্থানে এক খণ্ড জমি ক্রয় করা হয়েছে। এট আশু প্রয়োজন ছিল। শিল্প ও শিল্পীর স্বার্থে 'বাংলানাটকডটকম'-এর উল্লেখযোগ্য অবদান প্রশংসনীয়। অবহেলিত পাঁচমুড়ার টেরাকোটা শিল্প সারা দেশ এ বিশ্বের দরবারেও সমাদৃত। এর পরিকাঠামোগত উন্নয়ন হলে শিল্পী পরিবার নিজেরাই নিজেদের কর্মসংস্থান করতে সক্ষম হবে। বলা বাহুল্য অনতিবিলে এর উন্নয়নকল্পে সরকার তথা খাদি ও গ্রামীণ শিল্প পরিষদের নিকট থেকে সঙ্গে ভূমিকার আশ্বাস ও ইঙ্গিত পাওয়া যাচ্ছে। এই সংবাদ মুৎশিল্পী সমবায় সমিতি সূত্রে জানা যায়।

ফলাফল এবং বিশ্লেষণ: সাধারণ পর্যবেক্ষণ এবং মাঠ পরিদর্শন থেকে এটি প্রাথমিকভাবে বলা যেতে পারে যে এই পাঁচমুড়া গ্রামের কাজের পরিবেশ অত্যন্ত শান্তিপূর্ণ এবং এই হস্তশিল্প গ্রাম টি একটি সহযোগিতামূলক ও পাশাপাশি সমন্বয়ের মনোভাব পাওয়া যায়। এই গ্রামটি সমস্ত কাঠামোগত দিক থেকে এতটা উন্নত নয় তবুও তারা তাদের উত্পাদনশীল কাজটি খুব যত্ন সহকারে করে। এই অঞ্চলটি কুম্ভকার পাড়ার জন্য বিখ্যাত, এখানে সর্বাধিক মৃৎশিল্প তৈরির কারিগর বসবাস করেন। গ্রামের কেন্দ্রে একটি সাধারণ বসার জায়গা রয়েছে যা 'বৈঠক' নামে পরিচিত, সেখানে কারিগররা তাদের সাধারণ সভা এবং মৃৎশিল্পের ব্যবসা সংক্রান্ত কথোপকথনের জন্য সমবেত হন। এই গ্রামে আরও একটি সম্প্রদায় গঠন রয়েছে যা 'পাঁচমুড়া মৃৎশিল্পী সমবায় সমিতি' নামে পরিচিত যা এই নৈপুণ্য কর্মকাল্ডের বৃদ্ধি এবং বিকাশের জন্য বিশ্লেষণ করার জন্য শ্রমিকদের দ্বারা তৈরি একটি সংগঠন হিসাবে কাজ করে।

বর্তমান ক্ষেত্র অধ্যয়নের মাধ্যমে কারিগর সম্প্রদায়ের সামাজিক-সাংস্কৃতিক এবং অর্থনৈতিক বিশ্লেষণ করা যায়। এই অঞ্চল সাংস্কৃতিক ধারণা ও গতিশীলতার ক্ষেত্রে গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা পালন করে। এই জরিপ থেকে বলা যায় যে, সঠিক উন্নয়ন কৌশল না থাকা, আর্থিক ও প্রযুক্তিগত সহায়তাহীন এবং অন্যান্য প্রতিবন্ধকতার অনুপস্থিতির কারণে কুম্ভকার সম্প্রদায়ের আর্থ-সামাজিক অবস্থা ক্রমান্বয়ে নিম্নগামী হচ্ছে। প্রযুক্তিগত উদ্ভাবন এবং অগ্রগতির হারও খুব ধীর। এটি তার পূর্ণ শক্তি দিয়ে বাজারে প্রতিযোগিতা করতে পারে না। এই গবেষণা অধ্যয়নের জন্য বিভিন্ন সামাজিক-সাংস্কৃতিক এবং জনসংখ্যাগত কারণ বিবেচনা করা হয়। উত্তরদাতাদের বয়স, সাক্ষরতার অবস্থা, আয়ের স্তর, শ্রেণী এবং বর্ণের অবস্থা, ধর্মীয় গোষ্ঠী, আবাসনের অবস্থা কিছু মৌলিক পরামিতি যা এই গবেষণা অধ্যয়নের জন্য বিবেচনা করা হয়।

উপসংহার

শিল্পী হলেন তারা যারা নিজস্ব দক্ষতায় আসল কে প্রকাশ করে থাকেন। এমনই শিল্পের উদাহরণ উপরের পর্বে উল্লেখ্য। মাটি ও পাথরকে বিভিন্ন প্রযুক্তির মাধ্যমে রূপ দিয়ে ও মাটিকে পুড়িয়ে শক্ত বা

दीर्घस्थायी করা এমনই একটি শিল্পের কৌশল। এই কাজেই পাঁচমুড়া গ্রামের কুম্ভকার পরিবারগুলি নিপুন দক্ষ। পাঁচমুড়া সমাজ জীবনে শিল্প-কর্ম কতদিন আগে শুরু কিংবা কারা শুরু করেছিল তার সরকারি লিখিত তথ্য আজও জানা সম্ভব হয়নি। ৭০ বছর পূর্বে ব্রিটিশরা শাসন থাকাকালীন পাঁচমুড়া গ্রামের অবস্থা ছিল চরম অন্ধকার, শিল্প কর্ম বলতে তখন ছিল মৃৎপাত্র ও গ্রামীণ পূজোতে ব্যবহৃত দেবদেবীর মূর্তি নিদর্শন যা আজকালের দিনে সমৃদ্ধ লাভ করেছে। পাঁচমুড়ার টেরাকোটার ঘোড়া শিল্প এখন বিশ্বের বিখ্যাত রাষ্ট্রীয় পুরস্কার প্রাপ্ত শিল্পী প্রাতঃ রাসবিহারী কুম্ভকারের এর অবদান। স্বর্ণীয় ৫০-৬০ বছর পূর্বে পাঁচমুড়ার সকল কর্মকার গোষ্ঠী মৃৎপাত্র তৈরিতে ব্যস্ত ছিল কিন্তু পরিস্থিতির চাপে চাহিদা দুটো কমতে থাকায় হাতি ঘোড়ার সহ বর্তমান নতুন জিনিস তৈরির আগ্রহ বাড়লে ইদানিং পাঁচ মুড়ার শিল্প সংবাদ বৃদ্ধি পেয়েছে শিল্প সংখ্যা কম নই এবং শিল্পীদের গুণগত মান ও উৎপাদন ক্রমশ উর্ধ্বমুখী। যা আজ বিশ্ব দরবারে সুনাম অর্জন করেছে।

গ্রন্থপঞ্জিকা

- [1] রামানন্দ চট্টোপাধ্যায় - শিল্প ও সংস্কৃতি বাঁকুড়া (২০০৩ কোলকাতা পুস্তকমেলা।)
- [2] সঞ্জয় মুখোপাধ্যায় - সমাজ ইতিহাসের ধারায় দক্ষিণ পশ্চিম বঙ্গ (২০২২, ১লা জুলাই)
- [3] বাঁকুড়া অর্থনীতিতে লোক শিল্প(প্রথম খন্ড) - অচিন্ত্য জানা।
- [4] জেলা লোক সংস্কৃতি ও পরিচয় গ্রন্থ বাঁকুড়া(২০০২) - লোক সংস্কৃতি ও আদিবাসী সংস্কৃতি কেন্দ্র।
- [5] ডঃ শান্তি সিংহ - বাঁকুড়া পুরুলিয়া শিল্প সংস্কৃতি
- [6] টেরাকোটা শিল্প ও পাঁচমুড়া গ্রাম কুলাল পত্রিকা
- [7] পায়ে পায়ে বাঁকুড়া - রত্না ভট্টাচার্য শক্তিপদ ভট্টাচার্য
- [8] বাঁকুড়া জেলার বিবরণ রামানুজ কর ও ফকিরদাস চট্টোপাধ্যায়
- [9] রাঢ় সংস্কৃতির আউনিয় বাঁকুড়া অচিন্ত্য জানা
- [10] বাঁকুড়া লোকসংস্কৃতি পরিচয় গ্রন্থ
- [11] International journal of multidisciplinary educational research - Susmita Paramanik, P.P Sikdar, Debabrata Bondhapadhyay and Anirudha Banerjee.